

अमीरे अहले सुन्नत ﷺ के रखी तुल आखिर 1441
हिजरी मुताबिक दिसम्बर 2019 को मदनी मक्कजु फैजाने
मदीना में मदनी मुजाकरे से कब्ल होने वाले बयान का तहरीरी
गुलदस्ता, (मअ तरमीम व इजाफ़ा) बनाम

मज़ार गौसे पाक ﷺ

शाने رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ गौसे आज़म

आलह पाक के नटीक होने का वकील

01

सोशल मीडिया की एक पोस्ट

08

वस्वसा और उस का जवाब

08

70 हजार का इन्जिमाअ

15

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इलमव्या
(दावते इस्लामी)

شانے گاؤں سے آ جُم رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلٰیہِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّنَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ ط سُمِّ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

شانے گاں سے آ ج़م

अल्लाह पाक के नज्दीक होने का वजीफ़ा

अल्लाह पाक ने हज़रते मूसा कलीमुल्लाह पर वही ﷺ ناجِل فَرْمाई : ऐ मूसा ! क्या तुम चाहते हो कि जिस क़दर तुम्हारा कलाम तुम्हारी ज़बान के, तुम्हारे ख़्यालात तुम्हारे दिल के, तुम्हारी रूह तुम्हारे बदन के, तुम्हारी बीनाई का नूर तुम्हारी आंख के क़रीब है, मैं उस से भी ज़ियादा तुम्हारे क़रीब हो जाऊँ ? अُर्ज़ किया : हाँ ! फَرْमायَا : फिर मुहम्मदे मुस्तफ़ा ﷺ پर कसरत से दुरूद भेजो ।

(حلیۃ الاولیاء، 6/33، رقم: 7716 - مطابع المسرات (اردو)، ص 69)

नूहो ख़लीलो मूसा व ईसा
पाई मुरादें दोनों जहां में
दोनों जहां में दुन्या व दीं में
रख्खो लहूद में जिस दम अज़ीज़ो
रोजे कियामत मीजानो पुल पर

सब का है आक़ा नामे मुहम्मद
जिस ने पुकारा नामे मुहम्मद
है इक वसीला नामे मुहम्मद
मुझ को सुनाना नामे मुहम्मद
देगा सहारा नामे मुहम्मद

(कबालए बख्तिश, स. 134)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ *** صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

शैतान को पहचान लिया

شہنشاہ باغداد، ہujور گوئے پاک رحمۃ اللہ علیہ کے شہزادے گرامی
ہجارتے شیخ ابوبکر موسیٰ بن شیخ عبدالکادر جیلانی رحمۃ اللہ علیہ

فَرْمَاتِهِ هُنْ : مَرْءَةِ الْمَلِكِ (يَا'نِي گُوسُلِ آ'جِمِ) نَهِيَ إِشَادَهِ
 فَرْمَاهَهُ : مَيْنَ اپنے اک سافر میں سہرا کی تارف نیکلا اور چند دن
 وہاں ٹھرا مگر مुझے پانی نہیں میلتا تھا، جب مुझے شدید پ्यاس مہسوس
 ہری تو اک بادل نے مुڈ پر ساوا کیا اور اس میں سے کوچ باریش کے کھڑے
 گیرے، جنہے میں نے پی لیا، فیر میں نے اک نور دیکھا جس سے آسمان کا
 کنارا روشن ہو گیا اور اک شکل جاہیر ہری جس سے میں نے اک آواز
 سُونیٰ : اے ابُدُلِ کَادِير ! میں تera رہ ہوں اور میں نے تुم پر ہرام چیزوں ہلال
 کر دی ہیں । تو مेरے والیدے موهّتِ رَمَّ مُوسُلِ آ'جِمِ فَرْمَاتِهِ هُنْ کی میں نے
 أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيمِ پढ کر کہا : “اے شہزادے لईں ! دُور ہو جا ।”
 تو روشن کنارا اندھے میں تبدیل ہو گیا اور وہ شکل بُوآں بن گی،
 فیر اس نے مुڈ سے کہا : اے ابُدُلِ کَادِير ! اس سے پہلے میں ستر اولیا
 کو گومراہ کر چکا ہوں مگر تужے ترے ایلم نے بچا لیا । میں نے کہا : “یہ
 سیفِ مेरے ربا کَدِير کا فَجْلُو اہساناں ہے ।” شاہزادے گوئے آ'جِمِ شیخ
 ابُو نسر مُوسُا رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرْمَاتِهِ هُنْ : مَرْءَةِ الْمَلِكِ (یا'نِی
 کی بیوی) میں نے ترے لیے ہرام چیزوں ہلال کر دیں ।” (بُویں اسرار، ص 228)
 گوئے پاک رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرْمَاتِهِ هُنْ : یہ خیال کرنا کی شاریٰ مُکَلَّلِ فَات
 (احکامات) کیسی ہال میں ساکِت (یا'نی مُعاَف) ہو جاتے ہیں، گلتوں ہیں ।
 فَرْجِ ایجاد کا چوڈنا جِنْدِیکِیت (یا'نی بے دینی) ہے । ہرام کاموں کا
 کرنا مَا'سِیت (یا'نی گوناہ) ہے । فَرْجِ کیسی ہال میں ساکِت (یا'نی
 مُعاَف) نہیں ہوتا । (حقائق عن النصوف، ص 242)

ऐ اُشیکَنے گوئے آجِ جم ! دेखा آپ نے کی نماजٰ رोज़ा فُرائِیجٰ کیسی کو بھی مُعْبَد نہیں ہوتے، جैسا کی کुछ نام کے پیار جو نماجٰ نہیں پढ़تے । جب ان کے مُریدین سے پूछا جाए تو کہتے ہیں کہ ہمارے پیار سا ہب باغِ داد میں فُضُل کی نماجٰ پढ़تے ہیں اور فیر اجمرے میں جوہر کی نماجٰ میں ہوتے ہیں، مداری میں روزانہ ڈشا پढ़تے ہیں تو اس ترہ کی باتوں میں نہیں آنا چاہیے کہ جب ساییدوں علیہما السلام پر چلے نماجٰ فُرْجٰ، جی ہاں ! ہمارے نماجٰ مُعْبَد نہیں بھی بالکل ہم پر پانچ نماجٰ فُرْجٰ اور ہمارے آکا، مککی مداری مُسْتَفَاضٌ پر تہجیز علیہما السلام پر تہجیز علیہما السلام بھی فُرْجٰ بھی، مجبود یہ کہ گوئے پاک کو شہزاد نے دھوکا دene کی کوشش کی لے کिन آپ نے اس کے وار کو ناکام بنا دیا، اس نے دوسرا وار کیا کہ اُبُدُل کا دیر آپ کو آپ کے ایلہ نے بچا لیا تو گوئے پاک اس کو بھی سمجھا گا کہ میرے ایلہ نہیں، میرے رب نے مुझے بچا لیا । لیہا جا اس ایلہ پر گورنر نہیں کرنا چاہیے، ہر ہاں میں رجھے کریم کی رہمت پر نجیر رخنی چاہیے ।

صلوا على الحبيب ﷺ صلوا على محمد

ऐ اُشیکَنے گوئے آجِ جم ! یہ بھی ماًلُوم ہوا کہ شہزاد بड़ا دھوکے بآجٰ ہے، وہ ترہ ترہ کے جاؤڑی کرتا بھی دیکھاتا ہے، اس کے وار سے ہمہ شا خبُردار رہنا چاہیے، اپنی اُکلو ہو شیعیاری پر اُتیما د کرنے کے بجائے اُللّاہ پاک کے فُضُل کرما پر نجیر رخنی چاہیے । جس کے پاس مال ہوتا ہے اس کے پاس چور آتا ہے اور جس کے پاس دلیلتے ایمان ہے اس کے پاس ایمان کا لُوتے رہا شہزاد جُرُر آتا ہے نیجٰ جس

के पास ईमान जितना मज़बूत होगा उस के पास उसी क़दर नेकियों के ख़ज़ाने की भी कसरत होगी लिहाज़ा वहां शैतान बहुत ज़ियादा ज़ोर लगाएगा । हमारे पीरो मुर्शिद हुजूरे گौसे آجِ جم رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पास ईमान व आ'माल के ख़ज़ाने की कसरत देख कर शैतान ने डाका डालने की कई बार कोशिश की मगर الْعَمَدُ لِلَّهِ ! वोह नाकामो ना मुराद ही रहा ।

बचा लो दुश्मनों के बार से या گौसे जीलानी बड़ी उम्मीद से तुम को पुकारा या शहेबग़दाद वसीला चार यारों का खुदा से बख़्शावा दीजे करम फ़रमाइये मुझ पर खुदारा या शहेबग़दाद अगर्चें लाख पापी हैं मगर अन्तार किस का है ? तुम्हारा है तुम्हारा है तुम्हारा या शहेबग़दाद

(वसाइले बरिकाश, स. 544)

صلوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

एक जिन की तौबा

ऐ आशिक़ाने گौسے آجِ جم ! हमारे मुर्शिद گौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की इबादत पर इस्तिक़ामत आप की बहुत बड़ी करामत थी । मशहूर मकूला है : या'नी इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है ।

ऐ आशिक़ाने گौسے آجِ جم ! हम जोश में आ कर कुछ काम करते हैं फिर ठन्डे हो जाते हैं, जिसे सोडा वोटर के जोश का नाम दिया जाता है । मेरे मुर्शिद گौसे पाक की इस्तिक़ामत की भी क्या शान है ! चुनान्वे शहन्शाहे बग़दाद, सरकारे گौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक बार मैं जामेए मन्सूर में मसरूफ़े नमाज़ था कि सांप आ गया और उस ने मेरे सज्दे की जगह पर मुंह खोल दिया, मैं ने उसे हटा कर सज्दा किया मगर वोह मेरी गरदन से लिपटता हुवा मेरी एक आस्तीन में घुस कर दूसरी आस्तीन से निकला, जब मैं ने سलाम फेरा तो वोह ग़ाइब हो गया । दूसरे दिन जब मैं

उसी मस्जिद में दाखिल हुवा तो मुझे एक बड़ी बड़ी आंखों वाला आदमी नज़र आया, मैंने अन्दाज़ा लगा लिया कि येह शख्स इन्सान नहीं बल्कि कोई जिन्न है, वोह मुझ से कहने लगा कि मैं आप ﷺ को तंग करने वाला वोही सांप हूँ। मैंने सांप की शक्ल में बहुत सारे औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِمْ को आज़माया है मगर आप ﷺ जैसा किसी को भी साबित क़दम नहीं पाया। फिर उस जिन्न ने आप ﷺ के मुबारक हाथ पर तौबा कर ली।

(بُجُورُ الْأَسْرَارِ، ص 169)

हुए देख कर तुझ को काफिर मुसल्मां बने संगदिल मोम सां गौसे آ'जُم

(कबालए बिख्ताश, स. 183)

صَلُوٰعَلٰى الْحَبِيبِ صَلُوٰاللٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

खुशूओं खुजूओं (या'नी नमाज़ में अल्लाह पाक के लिये अ़ाजिज़ी व इन्किसारी के साथ जिस्मानी और ज़ेहनी तवज्जोह) हो तो ऐसा कि नमाज़ में ख़्वाह सांप ही लिपट जाए मगर अल्लाह पाक की तरफ से तवज्जोह न हटे। आह ! एक हमारी नमाज़ है कि अगर हम पर मछब्बी भी बैठ जाए तो परेशान हो जाएं, मा'मूली ख़ारिश भी हम से बरदाश्त न हो सके, इस वाकिए से येह भी मा'लूम हुवा कि जिन्नात भी हमारे गौसुल آ'जُم के मुरीद बन जाते हैं।

شैखُ ابू ॲब्दुल्लाह مُहम्मदٰ فَرَمَا تَهْنِئُ : مैं ने कुत्बे रब्बानी, महबूबे سुब्हानी, पीरे लासानी, किन्दीले नूरानी, शैखُ مُहयुद्दीन, ॲब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِمْ की चालीस साल तक ख़िदमत की, इस मुद्दत में आप इशा के वुजू से फ़त्र की नमाज़ पढ़ते थे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِمْ का मा'मूल था कि जब बे वुजू होते थे तो उसी वक्त वुजू फ़रमा कर दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ लेते थे।

(بُجُورُ الْأَسْرَارِ، ص 164)

تھیجیتول وujū کی فوجیلٹ

ऐ मेरे مुर्शिद گौसे पाक के दीवानो ! वुजू करने के बाद अगर

मकरुह वक्त न हो तो दो रकअत नफ्ल अदा करने को “تھیجیتول وujū”
कहते हैं। “تھیجیتول وujū” की बड़ी फوجीलत है और येह नेक बनने का
नुसखा बनाम “नेक आ’माल” में से एक नेक अमल भी है। सहीह मुस्लिम
शरीफ, हदीस नम्बर 553 में फरमाने मुस्तफ़ा صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَامٌ
अच्छे तरीके से वुजू करे और दो रकअतें क़ल्बी तवज्जोह (या’नी दिल की तवज्जोह)
से अदा करे तो उस के लिये जनत वाजिब हो जाएगी। (مسلم، ص 118، حدیث: 553)
**हो करम ! हुस्ने अमल आह ! नहीं है कोई न वज़ाइफ़ हैं न अज़्कार हैं गौसे آجُم
ह़शर के रोज़ हमारी भी शफ़ाअत करना आह ! हम सख्त गुनहगार हैं गौसे آجُم**

(वसाइले बख़्िਆश, स. 561)

صَلُوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَامٌ

गौसे पाक की शब बेदारी

ऐ आशिक़ाने गौसे आ’ज़म ! मेरे मुर्शिद हुजूर गौसे पाक
बहुत ज़ियादा इबादतो रियाज़त और कुरआने करीम की तिलावत किया
करते थे, चुनान्वे मन्कूल है कि शहन्शाहे बग़दाद हुजूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَامٌ
पन्दरह साल तक रात भर में एक कुरआने पाक ख़त्म करते रहे।
फरमाते थे (السرار، ص 118) आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَامٌ रोज़ाना एक हज़ार रकअत नफ्ल अदा
फरमाते थे (تفڑی الطَّرِیقُ، ص 35) : एक रात जब मैं ने अपने मामूलात (या’नी इबादात) का इरादा किया तो नफ्स ने सुस्ती
करते हुए थोड़ी देर सो जाने और बाद में उठ कर इबादत करने का मश्वरा
दिया, जिस जगह दिल में येह ख़याल आया था उसी जगह और उसी वक्त
एक कदम पर खड़े हो कर मैं ने एक कुरआने करीम ख़त्म किया। (ال قادر، ص 25)

نماज़ में सुस्ती क्यूं ?

ऐ अशिक्नाने गौसे आज़म ! हमारी सुस्ती के तो क्या कहने !

फ़त्र की अज़ान पर आंख खुल गई, घड़ी देखी, अभी तो जमाअत में थोड़ी देर है, फिर 15 मिनट के लिये सो जाते हैं। फिर उठे तो सूरज तुलूअ़ हो चुका और नमाज़ क़ज़ा हो गई, चलो क़ज़ा कर के पढ़ लेंगे, नमाज़ क़ज़ा होने का अफ़सोस भी नहीं होता, येह कितनी बड़ी मुसीबत है, थोड़ी सी मसरूफ़िय्यत होती है, चलो भई क़ज़ा पढ़ लेंगे। औरतें इस बला में ज़ियादा पड़ती हैं, शोर्पिंग सेन्टर जाएंगी, नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ लेंगी। येह भी वोह जो नमाज़ी हैं, जो नमाज़ नहीं पढ़तीं उन की तो बात ही अलग है। किसी की शादी या दा'वत में गए तो इस्लामी भाइयों की भी नमाज़ गई, जिन को ज़ज़्बा होगा हो सकता है वोह भाग कर शायद मस्जिद में पढ़ लें, औरतें तो इस की भी परवा नहीं करतीं। ऐसा न करें ! आप दुन्या में कहीं भी हों, शोर्पिंग सेन्टर या बाज़ार, शरई पर्दे की रिआयत के साथ नमाज़ की पाबन्दी करनी है, बल्कि ऐसे अवक़ात में जाएं कि उस में नमाज़ का वक्त न हो, अपना काम निमटा कर फ़ैरन घर आ जाएं और घर आ कर इत्मीनान से नमाज़ अदा करें और अगर आप के साथ कोई महरम है तो नमाज़ों के अवक़ात के इलावा उमूमन मस्जिद ख़ाली होती है, वहां पर्दे में वुज़ू वगैरा करवा कर नमाज़ पढ़ा दें। जब मेरे साथ सिक्यूरिटी के मुआमलात नहीं थे, तो किसी मस्जिद में, मैं ने खुद अपनी बच्ची, बच्चों की अम्मी को सफ़र वगैरा में नमाज़ पढ़ाई है, घर नहीं पहुंच सकते, चलो यहीं नमाज़ पढ़ लेते हैं। अगर ज़ज़्बा होगा तो आप कर सकते हैं।

अफ़सोस ! हम नमाज़ के मुआमले में सञ्जीदा (Serious) नहीं हैं। याद रखिये ! बहाना वोह बताएं जो क़ियामत में आप को बचा सके, वरना एक

दूसरे को हम मुत्मझन कर लेते हैं, रब को सब ख़बर है। जो नमाज़ नहीं पढ़ते उन को भी नमाज़ी बन जाना चाहिये, वरने के बाद बहुत पछताएंगे।

कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُوٰعَلٰى الْحَبِيبِ ﴿٢﴾ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

वस्वसा और उस का जवाब

हो सकता है किसी के ज़ेहन में येह ख़्याल आए कि बुजुर्गने दीन इतनी ज़ियादा इबादत कैसे किया करते थे ! रोज़गार और फिर हज़ार हज़ार रकअतें पढ़ लेना, पहली बात तो येह कि इतनी रकअतें आम आदमी नहीं पढ़ सकता, येह उन की करामत है, जैसा कि मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अलियुल मुर्तज़ा, शेरे खुदा عَنْهُ رَبُّنَا اللَّهُ جَب घोड़े पर सुवार होने लगते तो एक रिकाब (या'नी पेड़ल) में मुबारक क़दम रखते फिर दूसरा क़दम रिकाब तक लाते तो इन चन्द सेकन्डों के वक़्फ़े में पूरा कुरआने करीम तिलावत कर लिया करते थे, येह आप की करामत थी । (212 مُسْتَوْدِيَةُ النَّبُوَّةِ، شُرُون)

सोशल मीडिया की एक पोस्ट

नेक बन्दों के दिल महब्बते इलाही और तक्वे से आबाद होते हैं, येह अपने दिलों से दुन्या की महब्बत निकाल देते हैं, इन की रुहें ज़िक्रे इलाही के बिगैर बेचैनो बे क़रार रहती हैं, इस लिये वोह हर लम्हा यादे इलाही में मसरूफ़ रहते हैं और येह मक़ाम इबादतो रियाज़त में सख्त मेहनत करने से हासिल होता है । सोशल मीडिया की एक पोस्ट (कुछ तब्दीली के साथ बयान करता हूं) जिस में किसी ने कुछ यूं चोट की थी : किसी ने दूसरे से सुवाल किया कि बुजुर्गने दीन कैसे सारी सारी रात नमाज़ व कुरआन पढ़ते गुज़ार लेते थे ? तो सामने वाले ने जवाब दिया कि आज जिस तरह लोग सारी

ساری رات سو شال میڈیا پر Chatting یا' نی بات چیت کرنے، ویڈیو یو جم دیکھنے کو گئرا میں گujarāt دتے ہیں اور بارہا ثکن و کوپٹ کا iż-hār بھی نہیں ہوتا، تو بُوْجُوْگَنِ دین کا چینو کُرَار یادے پروردگار میں ہا جس کو جس سے وہ اپنے پاک پروردگار کی یاد میں اس ترہ مशگُول ہو جاتے کہ ساری رات گujarāt جانے کا پتا ن چلتا اور ہم دُنْیا کی لججھتوں میں اسے بُد مسٹ ہیں کہ ہم دُنْیا کی خواہیشات سے ہوش ہی نہیں آتا ।

ساری ساری رات گُناہوں، گپشپ، مُبُوْجِیکَل پروگرامم، ناچرَنگ کی مہفیلیوں میں گujarāt جائے، اسے لگتا ہے جسے رات چوٹی پڈ گई । جسے ہی نماج پढنے کی باری آتی ہے بیلکُول جان پے آ جاتی ہے، پانی بڈا ٹنڈا ہے ! نماج کے پढنے کی سبھی ہے نماج پڑنے کی سعادت بخشنے । اللّٰہ کریم گوئے پاک کے سادکے ہم سب کو پابندی سے سہی ہے نماج پڑنے کی سعادت بخشی । اللّٰہ کرے ہم سب پککے نمازی بن جائے، اسی آمیں کہنے کی شہزادی کو بھی جنکا آ جائے، اللہ عزیز ہم پککے با جما اُت نماج پڑنے والے بننے گے ।

گوئے پاک کو شہزادی نے یہا دت میں سُستی دیلایہ تو آپ نے ساری رات اک پاٹ پر خडے ہو کر کو رانے کریم ختم کیا تو ہم بھی گوئے پاک کے مُرید ہیں । دُنْیا یہا دت کی یاد ہو جائے، باریش ہو، تُوفان ہو، جلجلے ہوں، اولے برس رہے ہوں، ہم نماج نہیں چوڈنے گے ।

ہر یہا دت سے بُرَرَر یہا دت نماج کلے گرمگان کا سامانے فرہت نماج نارے دُوچھ سے بُرَشک بچا اُن یہہ بھاہیو ! گر خُدا کی ریضا چاہیے

ساری دُلَت سے بُد کر ہے دُلَت نماج ہے ماریجوں کو پے گامے سیحت نماج رہ سے دلواہ گی تُم کو جنات نماج آپ پڑتے رہے با جما اُت نماج

ہو گئی دُنْيَا خُرَاب آخِبِرَت بھی خُرَاب
کے نمازِ جِنَاح کا ہَكَدَار ہے
سہ سکو گے ن دو جَخْ کا ہَرَجِیْزِ اَجَّاب
یا خُودا تُعَذَّب سے اَنْتَار کی ہے دُعا

بَلَّا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ
بَلَّا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ
بَلَّا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ
بَلَّا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

بَهْرَتْ جِيَادَةِ إِبَادَةِ

شَاهِنْشَاهِ بَغْدَادِ هُجُورِ گُؤْسَے پاکِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ کا پَنْدَرَہ سال تک یہ ہال رہا کہ اِشَّا کی نمازِ کے بَا'دِ اک پاٹ پر خَدَّہ ہو جاتے اور کُو رَأَانِ شَرِيفِ پَدَّتے پَدَّتے راتِ گُوچَارِ دَتَّے تھے । (خبر الانجیل، ص 11) اکسراں اک تیہاریٰ رات میں دو رکعتِ نافلِ ادا کرتے، ہر رکعت میں سُورَتُرُحَمَانِ یا سُورُتُلِ مُعْجَزِ میل کی تیلَاوَت کرتے، اگر “سُورَتُلِ إِخْلَاس” پَدَّتے تو اس کی تَادَاد سو بار سے کام ن ہوتی । (تفہیم الطار، ص 35)

نافلِ رُوْجَوْنِ کی کسراٹ

اے اَشِیکَانے گُؤْسَے آ'جِم ! مِرے مُرشِیدِ هُجُورِ گُؤْسَے پاکِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ نِیا یاتِ کسراٹ سے رُوْجَے رُخْتے تھے ।

تو گُؤْسَے پاک کے تماام مانا نے والے یہ اَجَّم کرنے کی رمَاجَان کا اک رُوْجَا بھی بیلَا ڈُجے شَرِیْعَہ کَجَّا نہیں ہو گا، اور مَعَادُ اللَّهِ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ ہے، جیتنے کَجَّا ہو ہے، ان کی سچی توبہ کی جیے اور ان کی کَجَّا بھی کر لی جیے، مِرے مُرشِیدِ گُؤْسَے پاک بَا'جِ اَوَکَاتِ دَرَخَلَوْنِ کے پتھوں، جَنْگَلَی بُوٹَیوں وَغَیرَا سے رُوْجَا اِفْتَار فَرماتے । گَرَجِ کَائِمُولَلَیل اور سَائِمُونَہار (یا'نی رات کو جاگنا اور دین کو رُوْجَے رُخْنَا) آپ کی اَدَات بَن چُکی ہی ।

شَیخِ اَبُو اَبْدُلَلَاهِ مُحَمَّدِ بِنِ اَبِيلِ فَطْحَہِ حَرَقَیِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرماتے ہے: مِنْ نے هُجُورِ گُؤْسَے آ'جِمِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ کی خِدَمَت میں چند راتِ

گужاریں، آپ کا یہ ہاں تھا کہ رات کے ابوالہسوسے میں کुछ دیر نماجِ پढ़تے فیر جیکر کرتے رہتے یہاں تک کہ رات کا پہلا تیہاری (one-third) ہیسسا گujar جاتا اور یہ جیکر کرتے "الْبَيْحِيطُ الرَّبُّ السَّهِيدُ الْحَسِيدُ الْفَعَالُ" میں نے دेखا کہ کبھی آپ کا جسم کمज़وڑ ہو جاتا اور کبھی فربا، کبھی ہوا میں بولنڈ ہوتے اور میری نجروں سے گاٹب ہو جاتے فیر (توڈی دیر باد آ جاتے اور) نماجِ میں خडے ہو کر کورآنے کریم پढ़تے رہتے یہاں تک کہ رات کا دوسرا تیہاری ہیسسا گujar جاتا । آپ ساجدے بहت توبیل کرتے، اپنے چہرے کو جنمیں سے لگاتے । فیر تعلوں پر تک سوچکبا و موشاحدے میں بیٹھتے رہتے فیر نیہایتِ یجھے ایکسار اور خوشبو سے دعا مانگتے، اس وکعت آپ کو اس نورِ ڈانپ لےتا کہ نجروں سے گاٹب ہو جاتے یہاں تک کہ نماجِ فرج کے لیے دللت کدے سے باہر نیکلتے ।

(ب) بیانِ اسرار، ص 164)

گوئے پاک کا خونی خودا

ऐ ااشیکانے گوئے آجِ جم ! اللہاہ والوں کا ہمہشا سے یہ تریکا رہا ہے کہ ڈرے نے کیا کرنے اور گناہوں سے بچنے کے با وجوہ وہ بے پناہ خونی خودا رکھتے ہے । ہمارے آکا، ہمارے مرشید گوئے پاک بھی بے پناہ خونی خودا رکھتے ہے، چوناں ہے جو شرفوہیں سا'دی شیرازی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: جو شریخِ ابدیل کا دیر جیلانی رحمۃ اللہ علیہ کو ہر مکان کا 'با میں دیکھا گیا کہ کنکریوں پر سر رکھے بارگاہے ربانیل یجھت میں ارج گujar ہیں: "ऐ ربانی ! میڈے بخشنہ دے اور اگر میں سجن کا ہکدار ہوں تو بروجے کیا میں میڈے اندھا ٹھانا تاکی نے کوکار لونگوں کے سامنے شارمندرا ن ہونا پائے ।"

(گولیستان سا'دی، ص 54)

گوئے پاک کی ہند

ہنوز گوئے آجُم رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اولیا کے سردار ہے لیکن خوبی کے خود کا جو اسلام تھا اس کا اندازہ آپ کی ترکیب منسوب ان اشاعر سے لگایا جا سکتا ہے کہ آپ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ نے ہند کے دن فرمایا (عن اشاعر کا ترجیح) : “لوگ کہ رہے ہیں : ”کل ہند ہے ! کل ہند ہے !” اور سب خوش ہے । لیکن میں تو جس دن اس دنیا سے اپنا ہمایوں سلامت لے کر گیا، میرے لیے تو وہی دن ہند ہو گا ।” (فیضانِ رحمان، ص 309)

ہے اٹھار کو سلبے ہمیں کا دھنکا بچا اس کا ہمیں بچا گوئے آجُم
ہے اٹھار کی بے سباب بخشش آکا یہ فرمائے ہک سے دُعا گوئے آجُم

(واسیلہ بخشش، ص 551، 554)

ہے اٹھیکھانے گوئے آجُم ! ہم گوئے پاک کے کہے اٹھیکھا ہیں کہ ہمارے پیرو مرسید تو پیرانے پیر، والیوں کے امیر ہو کر بھی اتنی ہتھیار ہڈاتے کرے اور ایک ہم ہیں کہ ہم سے فرج نماج بھی ن پढی جائے اور پڑھے بھی تو بیلا ہجاتے شریعہ جماعت کے بیگیر । یاد رکھیے ! میرے آکا آلا ہجrat رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ فرماتے ہیں : جو (ایک) نماج کنجما کرتا ہے تو وہ ہجاتے سال جہنم کے انجام کا ہکدار ہے । (فتاوی رجیفیہ، 9/158) اور یہ بھی یاد رکھیے کہ جان بودھ کر بیلا ہجاتے شریعہ جماعت ڈھوندا بھی سخن گوناہ ہے । مہربن کرنے والے اپنے مہربوں کے نکشے کدم پر چلتا (یا نئی اس کو Follow کرتا) ہے । لیہا جا ہم میں بھی چاہیے کہ مہربنے گوئے آجُم کا دم بھرنے کے ساتھ ساتھ نمازوں کی پابندی کرے، فرج روچے رکھے، ہمیشہ ہر ہائل میں سچ بولے اور اپنے پاک پروردگار سے ڈرتے رہے । کاش کاش کاش !!!

گناہوں نے مुझ کو کہیں کا ن چوڑا ن ہو جاؤں برباد یا گوئے آج ۱۳
 مुझے نپسے جا لیم پے کر دیجے گالیب ہو ناکام ہم جا د یا گوئے آج ۱۳
 میرے کللب سے ہبھے دنیا کی مرسی د ٹخڈ جا اے بونیا د یا گوئے آج ۱۳
(واسیلے بخشش، ص. 555, 556)

صلوا علی الحبیب ﷺ صلی اللہ علی مُحَمَّدٍ

صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

ہجڑتے شیخ ابڈول کا دیری جیلانا نے اک مرتبا میمبار پر خडے ہو کر ارشاد فرمایا : مुझ پر اک مرتبا مंگل کے دن جوہر سے پہلے رسوئے پاک صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کرم فرمایا، اپنی جیوارت سے نواجڑا اور ارشاد فرمایا : “بے تا ! بیان کیون نہیں کرتے ?” میں نے ارجمند کی : “اے میرے نانا جا نا ! صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں ارجمند (گیرے ارجمند) ہوں، فوسہا اے بگدا د (بگدا د کے بडے بडے فسیہ یا’ نی ساف جبائن بولنے والوں) کے سامنے کہسے بیان کر رہا ہے ؟” تو پیارے آکا نے ارشاد فرمایا : “بے تا ! مونھ خولو ।” میں نے اپنا مونھ خولتا تو آپ نے میرے مونھ میں سات مرتبا لعاب دھن (ثوک مبارک) ڈال کر ارشاد فرمایا : “لے گوں کے سامنے بیان کیا کرو اور انہیں اچھی اچھی ہیکمتوں اور نسیحتوں کے جریئے راہے خودا کی ترک بولایا کرو ।” فیر میں نے نمازے جوہر ادا کی اور بیٹھ گیا، میرے پاس بہت سے لوگ جمیں ہو گئے، مुझ پر اک ارجمند سا خوافٹ تاری ثا کی اچنانک میں نے ویجدا نی کے فیضیت میں دیکھا کی امریکل معمینیں ہجڑت ابلیسیل مورت جا، شرے خودا ہنہ میرے سامنے تشریف فرمائے ہیں اور فرمائے رہے ہیں کی “اے بے تا ! بیان کیون نہیں

شانے گاؤں سے آ' جُم رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلٰیْہِ

कर रहे ?” मैं ने अर्जु की : “ऐ मेरे वालिद ! मुझ पर खौफ़ सा तारी है ।” तो आप ने इशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! अपना मुंह खोलो ।” मैं ने मुंह खोला तो आप رَغْفَى اللَّهُ عَنْهُ ने मेरे मुंह में छे मरतबा लुआब (थूक मुबारक) डाला । मैं ने अर्जु की : “आप ने सात बार क्यूँ नहीं डाला ?” तो फ़रमाने लगे : “رَسُولُ اللَّهِ أَكَلَهُ وَسَلَّمَ के अदब की वजह से (या’नी उन्होंने सात बार डाला तो इस लिये मैं ने एक बार कम छे बार डाला) ।” फिर वोह मेरी निगाहों से ग़ाइब हो गए और मैं ने बयान शुरूअ़ कर दिया । (بُجُورُ الْأَسْرَار، ص 58)

उल्लिमो फुर्यूजे शहन्शाहे तयबा हैं सीने में तेरे निहां गौसे आ 'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

गौसे पाक की नेकी की दा 'वत

آواजے مुبارک سب کو برابر سُنائی دتی

شہنشاہ بگداد کی مجالسے مُبَارک مें با وُجُود یہ کی
کہ شورکا ایجتیماع بہت جیسا دا ہوتے ہے لیکن آپ رحمة اللہ علیہ کی
آواجے مُبَارک جیسی نجدیک والوں کو سُنائی دتی ہی ویسی ہی دُور والوں
کو بھی سُنائی دتی ہی یا' نی دُور اور نجدیک والوں کے لیے آپ رحمة اللہ علیہ
کی آواجے مُبَارک یکسان (یا' نی اک جیسی) ہی ۔ (بجوہ السرار، ص 181)

ہجڑتےِ ابراہیم بین سرید فرماتے ہیں : جب ہمارے شیخ
ہujr-e-gous-e-aajam رحمة اللہ علیہ اعلیٰ اعلیٰ مالیم والہ لیباں پہن کر چکا
پر خडے ہو کر بیان فرماتے تو لوگ آپ کے کلامے مُبَارک کو بگوئے
سُناتے اور اس پر املا کرتے ۔ (بجوہ السرار، ص 189)

ای اشیکانے گوئے آجُم ! کربان جاہی میرے مرشد گوئے
پاک کی مُبَارک آواج پر ! آپ کی یہ جیتی جاگتی کرامت ہی کی
جیسی پہلے آدمی کو آواج آ رہی ہے هجڑا رونے، دس هجڑا رونے آدمی کو
بھی ویسی ہی آواج آتی ہی اور سُبْحَنَ اللَّهُ ! آپ کا ستر ستر هجڑا
अपराद کا ایجتیماع ہوتا ہا، ہماری آواج لاتڈ سپیکر کے جریا بھی
دُور پھونچانے کے لیے پروبلے م ہوتی ہے، کبھی ساؤنڈ اک دم تے ج ہو جاتا
ہے کبھی مधیم ।

70 هجڑا کا ایجتیماع

میرے مرشد، شہنشاہ بگداد، ہujr گوئے پاک فرماتے ہیں
کہ شوراع شوراع میں سوتے جاگتے مُذکور و نَهْيَ عَنِ النُّسُكِ (یا' نی نکی کی دا'vat دنے اور بُرائی سے مُنْعَنِ کرنے)
کی بُون سُووار رہتی اور میں تلبیگ کر آنے سُونت کے لیے اس کدر بے کرار رہتا کہ خود

par bhi iqbaliyahar n rhataa aur mere pas do tineen adamii bhi hotete to maein unheen hui kuraanoo sunnat ki baat sunanee lagata fir mere pas loogon ka itna kssir hujoom honee laga ki majlis me jagh baaki n rahi chunannche maein idgah chala gaya aur vahan wa'zoo naseehat karne laga, vahan bhi jagh tang ho gair to loog mera mibbar shahr ke bahar le gae aur be shumar makhruk suvar aur paeval ho kar aati aur ijtihamaz k baahar id garde khaddi ho kar wa'z sunnti hatta ki sunne valon ki ta'dad satr harj (70000) ke kriyab pahunch gair.

(بخاری، مولانا 177)

wa'zoon ki teri mursid hae dhoom char janib
jalwa dikhana mursid kalinma padhna mursid
utmatad aa padi hae ihmadaad ki baddi hae
saazil navaajishon ka kahata tha saajishon ka
azthaar ko buula kar mursid galte laga kar
bagdad ke musafir mera salam kahana

maein bhi kabhi to sun luan maiya kalam kahna
jis dam ho jindgi ka labarejz jaam kahna
fariyad kar raha hae tera gulam kahna
mursid ho dusmanon ka kistsa tamam kahna
fir khuba muskura kar karana kalam kahna
roe roe ke mursidi se mera yawam kahna

صلوا على الحبيب ﷺ صلى الله عليه وآله

بیان گوئے پاک میں اعلیٰ لیلیت کیرام کی حاضری

mankul hae ki goise a'zam رحمۃ اللہ علیہ jab wa'z ke liye mibbar par tashrif farama hotete to aap zundagi kahate to rne jumain me jis kదar auliya e kiram the khwah voh ijtimaz me majeed hotete ya n hotete sab khamoosh hote jate, yehee wajh hae ki aap ek baar al-hudail kahane ke ba'd thoddi der thahartae aur fir bayan ka aagaz faramate aur intni der me

इज्जिमाअू में इस क़दर हुजूम हो जाता कि जिस क़दर लोग नज़र आ रहे होते उस से कहीं ज़ियादा सुनने वाले और हाज़िरीन ऐसे होते जो ज़ाहिरी आंख से नज़र न आते थे । (بَلْرَالْأَخْيَارِ، ص 12) आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ شुरकाए इज्जिमाअू के दिलों के मुताबिक़ बयान फ़रमाते और कशफ़ के साथ उन की तरफ़ मुतवज्जे हो जाते, जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ मिम्बर पर खड़े होते तो आप के जलाल की वज्ह से लोग भी खड़े हो जाते थे और जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ उन से ख़ामोश होने का फ़रमाते तो सब ऐसे ख़ामोश हो जाते कि आप की हैबत की वज्ह से उन की सांसों के इलावा कुछ भी सुनाई न देता । (الاسرار، ص 181)

वाह क्या मर्तबा ऐ गौसे है बाला तेरा	ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा	औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा
क्या दबे जिस पे हिमायत को हो पन्जा तेरा	शेर को ख़तरे में लाता नहीं कुत्ता तेरा
ग़रज़ आक़ा से कर्ल अर्ज़ कि तेरी है पनाह	बन्दा मजबूर है ख़ातिर पे है कब्ज़ा तेरा
हुक्म नाफिज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ़ तेरी	दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा
फ़ख़े आक़ा में रज़ा और भी इक नज़ेर रफ़ीअ़	चल लिखा लाएं सना ख़्वानों में चेहरा तेरा

صَلُوٰ عَلَى الْحَبِيبِ ﴿١﴾ صَلُوٰ اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते खिज़्ज़ की आमद

हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं : शहन्शाहे बग़दाद, हुज़र गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की मजलिस शरीफ में तमाम औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِم जिस्मानी हयात और अरवाह के साथ (या'नी अपनी रूहों के साथ) नीज़ जिन और मलाएका (या'नी फ़िरिश्ते) तशरीफ़ फ़रमा होते थे और (कई बार तो) रसूले पाक صَلُوٰ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ भी तरबियतो

ہیما�ت فرمانے کے لیے تشریف فرمما ہوتے ہے، ہجرتے خیڑھ علیہ السلام اکثر ابکاٹ مجالس شریف مें تشریف فرمما ہوتے ہے اور ن سیف خود تشریف لاتے بالکل اس دائرے کے جس بھی بوجوگ سے آپ علیہ السلام کی مولانا کا ہوتی تو ان کو بھی مرسیدی گوئے پاک رحمۃ اللہ علیہ کی مجالس میں ہاجیر ہونے کی تاکید فرماتے کہ “جس کو بھی کامیابی کی خواہیش ہو اس کو گوئے پاک رحمۃ اللہ علیہ کی مجالس شریف کی حمہشہ ہاجیری جڑکری ہے ।” (اخبار الاخیر، ص 13)

**ਜسے شک ہو وہ خیڑھ سے پूछ دے گے تیری مجالس کا سماں گوئے آجُم
خواب کا منظر بے داری میں**

میرے مرسید، شہنشاہ بگداد گوئے پاک رحمۃ اللہ علیہ اک دن بیان فرمما رہے ہے اور آپ کے میرید خاس اور پہلے خلیفہ شیخ اعلیٰ بین ہوتی رحمۃ اللہ علیہ آپ کے کریب بیٹے ہوئے ہے کہ ان کو نہیں آ گئی تو میرے مرسید، شہنشاہ بگداد، ہنوز گوئے پاک رحمۃ اللہ علیہ نے اہلے مجالس سے فرمایا : خاموش رہو । اور آپ میمبر سے نیچے یتھر آئے اور شیخ اعلیٰ بین ہوتی رحمۃ اللہ علیہ کے سامنے با ادب خडھے ہو گئے اور ان کی ترکی دے گئی رہے । جب شیخ اعلیٰ بین ہوتی رحمۃ اللہ علیہ خواب سے بے دار ہوئے تو ہجرت گوئے پاک رحمۃ اللہ علیہ نے ان سے ارشاد فرمایا کہ آپ نے خواب میں اعلیٰ اہ پاک کے پیارے نبی کو دے گیا ہے ؟ انہوں نے جواب دیا : جی ہاں । آپ نے فرمایا : میں اسی لیے تو با ادب خڈھا ہو گیا ہے । فیر آپ نے پوچھا کہ نبی کے پاک رحمۃ اللہ علیہ نے کیا کیا

نہیں ہوت فرمائی؟ تو انہوں نے اُرچ کیا: آپ نے فرمایا کی
 “شیخِ اُبُدُل کَادِر جیلَانِی رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ کی خِدَمَت مِنْ حَاجِرِی کَوْ
 لَا جِمَّ کَار لَو! ” اس کے بآد لोگوں نے شیخِ اُبُلی بین ہے تی رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ
 سے پूछا کی ہو جو گوئے آجھم کے اس فرمان کا کیا مطلوب
 تھا کی میں اسی لیے بآ ادب خدا ہو گیا تھا تو وہی کامیل شیخِ
 اُبُلی بین ہے تی رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ نے فرمایا: “میں جو کوچھ خُواب میں دے� رہا
 تھا، گوئے پاک رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ اس کو جاگاتی آنکھوں سے بے داری میں دے� رہے
 تھے! ”

(بُبُالا سرار، ص 58)

کہا ہے کہ سایا تُوڑ پر بولبala ہے تera زیکر ہے کہا تera

بیانے گوئے آجھم میں جنناٹ کی شرکت

ہجڑتے شیخِ ابُو جکریٰ یا یہودی بین ابی نسیر سہراوی کے
 والید ماجید فرماتے ہیں کی میں نے اک دپھا اُبُل کے جریا
 جنناٹ کو بولایا تو انہوں نے کوچھ جیسا دے رکھ دی، فیر وہ میرے پاس
 آئے اور کہنے لگے کی “جب شیخِ سعید اُبُدُل کَادِر جیلَانِی
 بیان فرمائے ہوں تو اس وقت ہم میں بولانے کی کوشش میں
 کیا کرو! ” میں نے کہا: وہ کیون؟ جنناٹ نے کہا کی ہم ہو جو گوئے
 آجھم رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ کی ماجلیس میں حاجِر ہوتے ہیں۔ میں نے کہا: تum بھی ان
 کی ماجلیس میں جاتے ہو؟ انہوں نے کہا: ہاں! ہم مداروں میں کسی رتا داد
 میں ہوتے ہیں، ہمارے بہت سے گوراؤ ہیں جنہوں نے اسلام کبُول کیا ہے اور ان
 سب نے ہو جو گوئے پاک رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ کے ہاتھ پر تباہ کیا ہے! (بُبُالا سرار، ص 180)

13 ڈلूم مें بیان

ہجڑتے اُلّاما شیخِ اُبُدُل وہاب شا' رانی رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ لی�تے ہیں :
 ہجڑتے شیخِ اُبُدُل کا دیر جیلانا نی رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ ترہ ڈلूم میں تکریر
 فرمایا کرتے ہے । اور ہجڑوں گوئے پاک رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ کے مدرسے میں لوگ آپ
 سے تفسیر، ہدیس، فیکھ اور یلمول کلام پढتے ہے، دوپھر
 سے پہلے اور بآ'd دو نوں وکٹ لوگوں کو تفسیر، ہدیس، فیکھ، کلام،
 ٹسلوں اور نہوں پढاتے ہے اور جوہر کے بآ'd کیراتوں کے ساتھ کوڑانے
 کریم کی تالیم دتے ہے । (الطبقات الکبری للغفرانی، 1-179۔ بجوہر السرار، ص 225)

mere mušīd، شاہنشاہ باغداد، ہجڑوں گوئے پاک رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ اک ہفپتو
 میں تین بار بیان فرماتے ہے، مدرسے میں جو معا کی سوہنہ کو، میگال کی شام
 کو اور سراۓ میں ایتوار کی سوہنہ کو । (قلائد الجواہر، ص 18)

آپ کی مجالیس میں 400 جبکہ دس سو اُلّیم آپ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ کی
 تکریر لی�ا کرتے ہے اور بسا ایک کتاب مجالیس کی حالت میں آپ
 رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ ہوا پر چند کدم ٹڈ کر فیر کورسی پر آ کر تشریف
 فرمایا ہو جایا کرتے ہے । آپ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ فرماتے ہیں : میرا جی چاہتا ہے کی
 جیس ترہ میں پہلے ثا اب بھی جنگلوں میں رہوں کی ن میں لوگوں کو دے کھونا وہ
 مुझے دے دیں । فیر فرمایا کی اُلّاہ پاک نے میڈ سے یہ چاہا کی لوگوں
 کو فائدا پہنچے کیونکہ میرے ہاث پر یہودی نصارا میں سے پانچ سو سے جیسا دادا
 میں مسلمان ہوئے ہیں اور میرے ہاث پر اک لاخ سے جاؤ دادا بے اُمل تاؤ دادا ہوئے
 (یا' نی تاؤ دادا کی) اور یہ بडی نہ کی ہے । (بجوہر السرار، ص 184)

بیان سمع کے تاؤ دادا گونہ گار کر لے جاؤ میں وہ دے دے اسرا گوئے آجِ جم

गैर मुस्लिमों का कबूले इस्लाम

एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ की ख़िदमते सरापा अज़मत में 13 गैर मुस्लिम आए और आप के हाथ पर मजलिसे वा'ज़ में मुसल्मान हुए फिर कहने लगे कि हम मगरिब (या'नी West) के अलाके के नसारा हैं। हम ने इस्लाम का इरादा किया लेकिन हमें तरहुद (शक) था कि कहां जा कर इस्लाम लाएं, कुछ फैसला नहीं कर पाते थे। तब हम ने गैब से आवाज़ सुनी कि “ऐ काम्याब गुरौह ! तुम बग़दाद जाओ और शैख़ अब्दुल क़ादिर के हाथ पर मुसल्मान हो जाओ क्यूं कि उन की बरकत से तुम्हारे दिलों में वोह ईमान दिया जाएगा कि जो और जगह हासिल न होगा ।”

(185 میں اسرا، بخش)

کल्बे मुर्दा को भी ठोकर से जिला दो मुर्शिद

बिल यक़ीं तुम ने तो मुर्दा को जिलाया या गैस

इमामुन्हूव बना दिया

इमाम अबू मुहम्मद बिन ख़शाब नहूवी कहते हैं : मैं जवानी की हालत में इल्मे नहूव (अरबी ग्रामर) पढ़ा करता था। मैं लोगों से हुजूर गैसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ के दिल नशीन बयान की ख़ूबियां सुना करता था। मैं इरादा करता था कि मैं आप का बयान सुनूं मगर मेरे पास वक्त नहीं होता था। एक दिन मैं ने पक्का इरादा कर लिया और हुजूर गैसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ के इज्ञिमाअू में हाजिर हो गया, जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ ने बयान शुरूअू किया तो मेरे दिल को आप का कलाम सुन कर मज़ा न आया और न ही मैं कलाम

समझ पाया। मैं ने अपने दिल में कहा : मेरा आज का दिन ज़ाएअ़ हो गया। उसी वक्त हुज्जूर گاؤसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हो कर इर्शाद फ़रमाया : तेरे लिये हलाकत हो, तू ज़िक्र की मजलिस पर इल्मे नहूव (अरबी ग्रामर) को फ़ज़ीलत देता है और इस को इख्तियार करता है ? हमारी सोहबत इख्तियार कर, हम तुझे (अरबी ग्रामर के मशहूर इमाम) सीबवैह बना देंगे। ये ह सुन कर अब्दुल्लाह ख़शशाब नहूवी گاؤसे पाक की सोहबत में रहने लगे जिस का नतीजा ये ह ज़ाहिर हुवा कि आप نहूव के साथ कई उलूम में माहिर (Expert) हो गए। (فَلَمَّا جَاءَهُ مَنْ سَمِعَ مِنْ أَنْوَارِ الْأَسْلَامِ لَهُ بَهِتَرٌ³⁹- تاریخ الاسلام للذہبی، ص 32)

سُلْطَانَةِ وِلَايَةِ گاؤسے پاک وَلِيَاتِ پے ہُکُومَتِ گاؤسے پاک

شَاهِبَاجَےِ خِلَاتِ گاؤسے پاک فَانُوسِ هِدَايَتِ گاؤسے پاک

اللَّهُ كَيْمَانِ الرَّحْمَةِ گاؤسے پاک هِنْ بَادِسِ بَرَكَاتِ گاؤسے پاک

صَلُوٰا عَلَى الْحَبِيبِ ﴿۲﴾ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ये ह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्जिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब नियते सवाब तोहफे में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अद्द सुन्तां भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ्ते का रिसाला

